हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा टूटीकंडी के ग्रामीणों के साथ आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित 'वन-महोत्सव' की रिपोर्ट

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 03 अगस्त, 2022 को टूटीकंडी- शिमला के पास वन भूमि में वहाँ के स्थानीय निवासियों के साथ मिलकर 73वें वन-महोत्सव का आयोजन किया । **डॉ.जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ,** प्रभाग-प्रमुख विस्तार ने मुख्य अतिथि **श्री सोम दत्त शर्मा, भारतीय वन सेवा, मुख्य अरण्यपाल शिमला,** टूटीकंडी-शिमला के स्थानीय निवासियों और अन्य प्रतिभागियों का स्वागत किया । **डॉ. सिंह** ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि वन महोत्सव बनाने का मुख्य उदेश्य जनमानस के बीच पौधरोपण और पर्यावरण सरंक्षण के बारे में जागरूकता लाना रहता है ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि **श्री सोम दत्त शर्मा** द्वारा **काफ़ल** का पौधा लगाकर किया गया । उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर इस आंदोलन का आरंभ भारत के तत्कालीन कृषि मंत्री श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी द्वारा वर्ष 1950 में किया गया था । पर्यावरण संरक्षण बेहद आवश्यक है, मानव के निजी स्वार्थों का परिणाम प्रकृति को भुगतना पड़ेगा । उन्होंने आगे कहा कि पर्यावरण संरक्षण जनता और सरकार दोनों की भागीदारी से संभव है । उन्होंने विभिन्न पुराणों में कही गयी बातों का उल्लेख करते हुए वृक्षारोपण और पर्यावरण संरक्षण के बारे में प्रकाश डाला । भविष्य में पर्यावरण को संतुलित रखने हेतु वृक्ष लगाना अति आवश्यक है । उन्होंने संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की । संस्थान के निदेशक **डॉ. संदीप शर्मा** ने कहा कि इस अवसर पर बांस, काफ़ल, जंगली आड़ु, खिड़क, व्यूल, कचनार, वान, दाड़ू व देवदार के 180 पौधे रोपे जा रहे हैं । जिससे क्षेत्र में मिश्रित वन तैयार होगा और इस तरह आग की सम्भावना को भी कम किया जा सकता है । पौधरोपण में जंगली खाद्य पौधों को भी सम्मिलित किया गया है ताकि जंगली जानवरों के लिए भी भोजन उपलब्ध हो सके । उन्होंने कहा कि वृक्ष वातावरण में उत्सर्जित कार्बन डाई-आक्साईड गैस को ग्रहण कर हमारे जीवन के लिये अति आवश्यक आक्सीजन देता है । इसके अतिरिक्त, वृक्ष हमें अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ प्रदान करते हैं और साथ-साथ पर्यावरण के संतुलन में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं । वृक्षारोपण कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों, वन विभाग के अधिकारियों एवं टूटी कंडी के स्थानीय निवासियों सहित 70 लोगों ने भाग लिया और सभी ने मिलकर उपरोक्त प्रजातियों के पौधे रोपे । कार्यक्रम के आयोजन में डॉ.जगदीश सिंह, वैज्ञानिक- एफ, डॉ. जोगिंदर सिंह, मुख्य तकनीकी अधिकारी, श्री कुलवंत राय गुलशन, श्री स्वराज, श्री राजेंदर पाल भाटिया एवं तरुण शर्मा ने मुख्य भूमिका निभाई । **श्री दिनेश पाल, उप अरण्यपाल** ने मुख्य अतिथि, टूटीकंड-शिमला के स्थानीय निवासियों एवं अन्य प्रतिभागियों का कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सहयोग हेतु धन्यवाद प्रेषित किया ।

टूटीकंडी में रोपे विभिन्न प्रजातियों के 1

achal.com/2022/08/180-plants-of-different-species-planted-in-tutikandi/

दिव्य हिमाचल हिमाचल देश-विदेश स्थानीय आर्थिक खेल विचार यूथ लाइफ कर्मचारी मैगजीन पड़ोस

टूटीकंडी में रोपे विभिन्न प्रजातियों के 180 पौधे

By: Divyahimachal Aug 4th, 2022 12:55 am

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत मुख्य अरण्यपाल सोमदत्त शर्मा ने काफल का पौधा रोपकर 73वें वन महोत्सव का किया आगाज

स्टाफ रिपोर्टर-शिमला

शिमला के टूटीकंडी में स्थानीय लोगों के साथ मिलकर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपे। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 73वें वन महोत्सव का आयोजन किया, जिसका शुभारंभ मुख्य अरण्यपाल सोमदत्त शर्मा ने काफल का पौधा लगाकर किया गया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर इस आंदोलन का आरंभ भारत के तत्कालीन कृषि मंत्री कन्हैया लाल माणिक लाल मुंशी द्वारा 1950 में शुरू किया गया था। पर्यावरण संरक्षण बेहद आवश्यक है, मानव के निजी स्वार्थों का परिणाम प्रकृति को भुगतना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण जनता और सरकार दोनों कि भागीदारी से संभव है। उन्होंने विभिन्न पुराणों में कही गई बातों का उल्लेख करते हुए पौधारोपण और पर्यावरण संरक्षण के बारे में प्रकाश डाला। भविष्य में पर्यावरण को संतुलित रखने हेतु पौधे लगाना अतिआवश्यक है।

Powered By VDO.AI

टूटीकंडी में रोपे विभिन्न प्रजातियों के 1

chal.com/2022/08/180-plants-of-different-species-planted-in-tutikandi/

दिव्य हिमाचल हिमाचल देश-विदेश स्थानीय आर्थिक खेल विचार यूथ लाइफ कर्मचारी मैगजीन पड़ोस

Google के दिखाए जा रहे विज्ञापन

यह विज्ञापन देखना बंद करें | यह विज्ञापन क्यों?

उन्होंने संस्थान द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की। संस्थान के निदेशक डा.संदीप शर्मा ने कहा कि बांस, काफल, जंगली आड़ू, खिड़क, बियूल, कचनार, वान, दाड़ू व देवदार के 180 पौधे रोपे गए, जिससे क्षेत्र में मिश्रित वन तैयार होगा, जिससे आग की संभावना को भी कम किया जा सकता है। पौधारोपण में जंगली खाद्य पौधों को भी सम्मिलित किया गया है, ताकि जंगली जानवरों के लिए भी भोजन उपलब्ध हो सके। उन्होंने कहा कि वृक्ष वातावरण में उत्सर्जित कार्बन डाई-आक्साईड गैस को ग्रहण कर हमारे जीवन के लिए अतिआवश्यक ऑक्सीजन देता है। इसके अतिरिक्त हमें कई प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ होने के साथ-साथ पर्यावरण का संतुलन भी बना रहता है। डाक्टर जगदीश सिंह, वैज्ञानिक- एफ, प्रभाग प्रमुख विस्तार ने कहा कि वन महोत्सव बनाने का मुख्य उद्देश्य जनमानस के बीच पौधरोपण और पर्यावरण सरंक्षण के बारे में जागरूकता लाना रहता है। कार्यक्रम के आयोजन में डाक्टर जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ, डाक्टर जोगिंद्र सिंह मुख्य तकनीकी अधिकारी, कुलवंत राय, स्वराज, राजेंद्र पाल एवं तरुण शर्मा आदि ने मुख्य भूमिका निभाई।